JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"पूर्व प्राथमिक स्तर पर शैक्षिक विकास हेतु आँगनबाड़ी केन्द्रों की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन।"

श्रीमती उषा शर्मा
शोध छात्रा, (शिक्षा),
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

डॉ. नीतू व्यास
सहायक आचार्य
लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र उदयपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र एवं शहरी क्षेत्र के पूर्व प्राथमिक स्तर पर शैक्षिक विकास हेतु आँगनबाड़ी केन्द्रों की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन पर आधारित है। आंगनवाड़ी पूर्व प्राथमिक कक्षाओं के लिए सर्वांगीण विकास का कार्य करती है। ग्रामीण आंगनवाड़ी में शारीरिक विकास, मानसिक विकास, सामाजिक विकास, संवेगात्मक विकास, नैतिक विकास, शैक्षिक गतिविधि, सह शैक्षिक गतिविधि, आकलन एवं समग्र रूप से भी उच्च पाया गया वहीं भाषायी विकास औसत स्तर का पाया गया है। जबकि शहरी क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं में शैक्षिक विकास का स्तर निम्न क्षेत्रों में क्रमश: शारीरिक विकास, मानसिक विकास, सामाजिक विकास, नैतिक विकास, भाषायी विकास एवं शैक्षिक गतिविधि में औसत स्तर पर पाया गया वहीं संवेगात्मक विकास, सह शैक्षिक गतिविधि, आकलन एवं समग्र रूप से शैक्षिक विकास का स्तर निम्न पाया गया है।

मध्यमान अंकों को देखने पर स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के आंगनवाड़ी एवं शहरी क्षेत्र के आंगनवाड़ी की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र के आंगनवाड़ी का स्तर शैक्षिक विकास के अन्तर्गत अधिक होता है।

1. प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र के चरित्र का प्रतिबिम्ब उसके शिक्षण संस्थान हैं। शिक्षण संस्थानों की प्रकृति, ढाँचा एवं कार्य करने की शैली इत्यादि इस बात के द्योतक हैं कि राष्ट्र की भावी पीढ़ी किस दिशा की ओर अग्रसर है। हर राष्ट्र की अपनी कुछ आकांक्षाएँ होती हैं जिनका प्रतिनिधित्व वहाँ का नागरिक करता है। कोई राष्ट्र अपना कैसा भविष्य तैयार करता है इस बात का पूर्वाभास हम उस देश की शिक्षण संस्थाओं की कार्य प्रणाली से आसानी से कर सकते हैं।

शिक्षा की बदलती हुई आवश्यकताओं तथा देश के सभी बालकों को प्रारंभिक शिक्षा उपलब्ध कराने के संदर्भ में आँगनबाड़ी केन्द्रों की स्थापना की गई। राज्य में समेकित बाल विकास सेवा कार्यक्रम का प्रारम्भ महात्मा गांधी की वर्षगाठ पर 2 अक्टूम्बर 1975 में पंचायत समिति गढी जिला बासवाडा में किया गया। बच्चों के सम्पूर्ण विकास की कल्पना उन्हीं के परिवेश के (अंचल) आंगन में की गई।

भारत सरकार द्वारा 1975 में बालभूख और कुपोषण से निपटने के लिए एकीकृत बाल विकास सेवा कार्यक्रम के हिस्से के रूप में शुरू किया गया था। आँगनबाडी केन्द्र बाल विकास और वृद्धि में सहायता प्रदान करने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा के उद्भव का जो मूल कारण रहा है उसके पीछे शिक्षाविदों का एक मात्र मन्तव्य बालक को उन सभी अभावों से दूर रखना है जो उसके व्यक्तित्व में सामाजिक गतिशीलता के फलस्वरूप असंतुलन पैदा करते हैं। पूर्व प्राथमिक शिक्षण संस्थानों का वातावरण अनौपचारिक एवं परिवार जैसा रखने पर बल दिया जाता रहा है। तीन से छः वर्ष की आयु पूर्व प्राथमिक शिक्षण हेतु सर्वमान्य है।

बच्चे में अच्छी स्वस्थ आदतें डालना और व्यक्तिगत अनुकूलन के लिए जरूरी बुनियादी योग्यता पैदा करना, जैसे पोशाक पहनना, नहाने धोने की आदतें, खाना, सफाई, आदि। वांछनीय सामाजिक अभिवृत्तियाँ और शिष्टाचार विकसित करना और स्वस्थ सामूहिक भागीदारी को प्रोत्साहित करना, जिससे बच्चा दूसरों के अधिकारों एवं विशेषाधिकारों के प्रति सजग रह सके।

2. शोध शीर्षक

पूर्व प्राथमिक स्तर पर शैक्षिक विकास हेतु आँगनबाड़ी केन्द्रों की भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

3. शोध प्रश्न

1. क्या पूर्व प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक हेतु आँगनबाड़ी केन्द्र उपयोगी है?
2. पूर्व प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास हेतु आँगनबाड़ी केन्द्रों की क्या भूमिका है?

4. शोध उद्देश्य

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के पूर्व प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास के संदर्भ में अध्ययन करना।
2. ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के पूर्व प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।

5. शोध परिकल्पना

1. ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के पूर्व प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

6. शोध परिसीमन

1. प्रस्तुत शोधकार्य को उदयपुर जिले के अन्तर्गत आने वाली आंगनबाडी केन्द्रो तक सीमित रखा गया।
2. प्रस्तुत अध्ययन में आंगनबाडी में नामांकित पूर्व प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों को ही लिया गया।

7. न्यादर्श चयन

उपर्युक्त शोध हेतु यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा न्यादर्श चयन किया गया जो इस प्रकार है :-

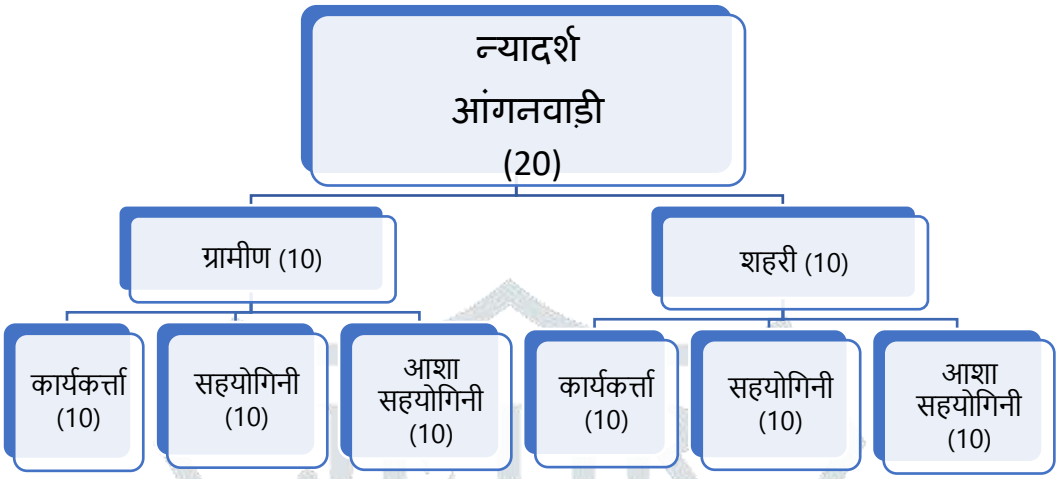

प्रस्तुत शोध हेतु शोधार्थी द्वारा न्यादर्श चयन हेतु उदयपुर जिले की 20 आंगवाड़ी का चयन किया जिसमें ग्रामीण क्षेत्र से 10 एवं शहरी क्षेत्र से 10 आंगनवाड़ी का चयन लॉटरी विधि से किया गया। प्रत्येक आंगनवाड़ी से 1 कार्यकर्त्ता, 1 सहयोगिनी एवं 1 आशा सहयोगिनी का चयन किया गया। कुल 60 कार्मिकों का चयन किया गया।

8. शोध विधि, प्रविधि, उपकरण

8.1 शोध विधि

इस अनुसंधान में शोधार्थी ने पूर्व प्राथमिक स्तर पर शैक्षिक विकास हेतु आँगनबाड़ी केन्द्रों की भूमिका का विष्लेषणात्मक अध्ययन हेतु शोधकर्त्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

8.2 शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण हेतु सांख्यिकी प्रविधियों में 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया।

8.3 शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देष्यों को ध्यान में रखते हुए सर्वेक्षण द्वारा आंकडों के संकलन हेतु मानकीकृत उपकरण का प्रयोग किया गया है, जो इस प्रकार है :-

स्वनिर्मित उपकरण :- स्वास्थ्य संबंधी प्रश्नावली

9. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

उद्देश्य 1 : ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के पूर्व प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास के संदर्भ में अध्ययन करना।

सारणी संख्या 1

पूर्व प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास का स्तर

आंगनवाडी		ग्रामीण				शहरी			
		मध्यमान	मानक विचलन	श्रेणी	N	मध्यमान	मानक विचलन	श्रेणी	N
शैक्षिक विकास	शारीरिक विकास	31.57	4.92	उच्च	30	21.97	6.76	औसत	30
	मानसिक विकास	17.53	2.89	उच्च	30	12.13	3.30	औसत	30
	सामाजिक विकास	17.50	2.86	उच्च	30	12.63	3.74	औसत	30
	संवेगात्मक विकास	14.27	2.26	उच्च	30	11.73	1.98	निम्न	30
	नैतिक विकास	14.23	2.34	उच्च	30	11.33	1.88	औसत	30
	भाषायी विकास	17.63	2.50	औसत	30	14.53	3.25	औसत	30
	शैक्षिक गतिविधि	24.70	3.88	उच्च	30	19.67	5.31	औसत	30
	सह-शैक्षिक गतिविधि	17.67	3.36	उच्च	30	12.67	3.59	निम्न	30
	आकलन	17.67	3.15	उच्च	30	12.37	2.85	निम्न	30
	कुल शैक्षिक विकास	172.77	20.48	उच्च	30	129.03	26.20	निम्न	30

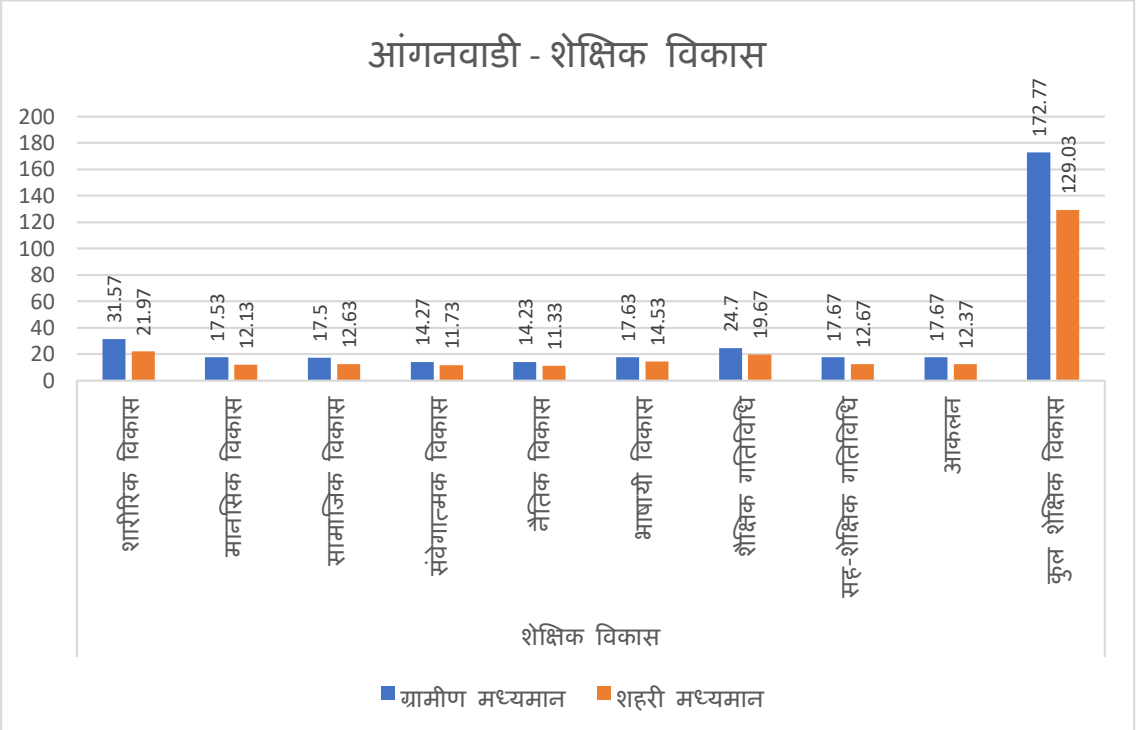

आरेख संख्या 1

पूर्व प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास का स्तर

विश्लेषण :- आंगनवाड़ी में शैक्षिक विकास के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं में शैक्षिक विकास का स्तर निम्न क्षेत्रों में क्रमश: शारीरिक विकास, मानसिक विकास, सामाजिक विकास, संवेगात्मक विकास, नैतिक विकास, शैक्षिक गतिविधि, सह शैक्षिक गतिविधि, आकलन एवं समग्र रूप से भी उच्च पाया गया वहीं भाषायी विकास औसत स्तर का पाया गया है। जबकि शहरी क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं में शैक्षिक विकास का स्तर निम्न क्षेत्रों में क्रमश: शारीरिक विकास, मानसिक विकास, सामाजिक विकास, नैतिक विकास, भाषायी विकास एवं शैक्षिक गतिविधि में औसत स्तर पर पाया गया वहीं संवेगात्मक विकास, सह शैक्षिक गतिविधि, आकलन एवं समग्र रूप से शैक्षिक विकास का स्तर निम्न पाया गया है।

उद्देश्य सं. 2. : ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के पूर्व प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।

सारणी संख्या 2

पूर्व प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास की तुलना

	कुल शैक्षिक विकास	
	ग्रामीण	शहरी
N	30	30
मध्यमान	172.767	129.033
मानक विचलन	20.482	26.196
मध्यमान अन्तर	43.733	
t मान	7.204	
p मान	0.000	

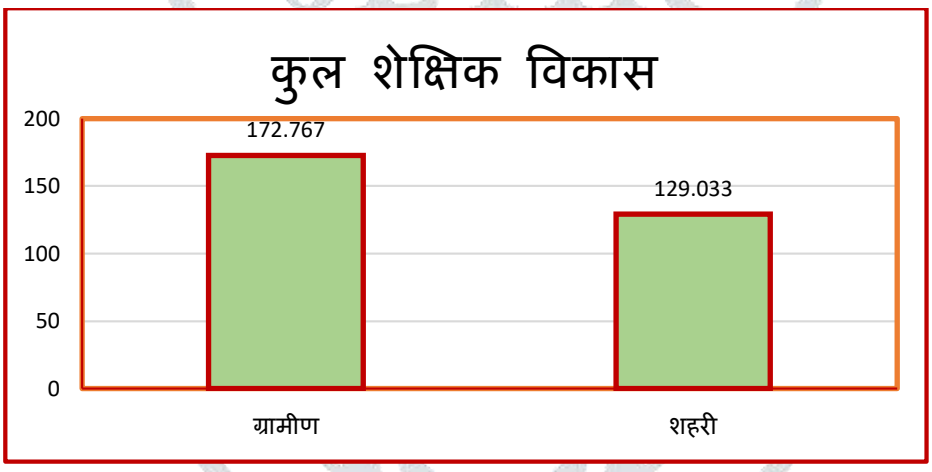

आरेख संख्या 2

पूर्व प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास की तुलना

विश्लेषण :- समग्र क्षत्रानुसार शैक्षिक विकास के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र के आंगनवाड़ी का मध्यमान 172.767 तथा शहरी क्षेत्र के आंगनवाड़ी का मध्यमान 129.033 प्राप्त हुआ। 't'का मान 7.204 प्राप्त हुआ जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है तात्पर्य है कि ग्रामीण क्षेत्र के आंगनवाड़ी एवं शहरी क्षेत्र के आंगनवाड़ी में शैक्षिक विकास में सार्थक अन्तर होता है, मध्यमान अंकों को देखने पर स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के आंगनवाड़ी एवं शहरी क्षेत्र के आंगनवाड़ी की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र के आंगनवाड़ी का स्तर शैक्षिक विकास के अन्तर्गत अधिक होता है।

परिकल्पना सं. 1. : ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के पूर्व प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास के स्तर में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष :- अतः शून्य परिकल्पना के अस्वीकृति की अवधारणा सिद्ध होती है। इसलिए ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक विकास के संदर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत होती है। अतः कहा जा सकता है कि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक विकास के मध्यमानों में सार्थक अन्तर है।

10. शोध से प्राप्त निष्कर्ष

- प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राप्त दत्तों का विश्लेषण करने के पश्चात् निम्नलिखित निष्कर्ष सामने आए :-
- आंगनवाड़ी में शैक्षिक विकास के अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं में शैक्षिक विकास का स्तर निम्न क्षेत्रों में क्रमश: शारीरिक विकास, मानसिक विकास, सामाजिक विकास, संवेगात्मक विकास, नैतिक विकास, शैक्षिक गतिविधि, सह शैक्षिक गतिविधि, आकलन एवं समग्र रूप से भी उच्च पाया गया
- शहरी क्षेत्र के छात्र एवं छात्राओं में शैक्षिक विकास का स्तर निम्न क्षेत्रों में क्रमश: शारीरिक विकास, मानसिक विकास, सामाजिक विकास, नैतिक विकास, भाषायी विकास एवं शैक्षिक गतिविधि में औसत स्तर पर पाया गया वहीं संवेगात्मक विकास, सह शैक्षिक गतिविधि, आकलन एवं समग्र रूप से शैक्षिक विकास का स्तर निम्न पाया गया है।
- शहरी क्षेत्र की आंगनवाड़ी की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र की आंगनवाड़ी में शैक्षिक विकास अधिक एवं उच्च स्तरीय पाया गया।
- ग्रामीण क्षेत्र के आंगनवाड़ी का मध्यमान 172.767 प्राप्त हुआ। एवं शहरी क्षेत्र के आंगनवाड़ी का मध्यमान 129.033 प्राप्त हुआ। 't' का मान 7.204 प्राप्त हुआ

11. सन्दर्भ ग्रंथ :-

1. पाण्डेय, डॉ. रामशकल (2014), '' विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री'', श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
2. व्यास, डॉ. भगवतीलाल (2016), ''समकालीन भारत और शिक्षा'', राधा प्रकाशन प्रा. लि., आगरा।
3. कपिल, एच.के. (2007) ''अनुसंधान विधियाँ'', एच.पी. भार्गव बुक हाउस 4/230, कचहरी घाट, आगरा
4. कपिल, एच.के. (2010) ''सांख्यिकी के मूल तत्व'', अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा-2
5. भट्नागर, सुरेश (1992-93) 'शिक्षा मनोविज्ञान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
6. भार्गव, डॉ. महेश (2003), "आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन" वेदान्त पब्लिकेशन लखनऊ।
7. चौबे, डॉ. सरयू प्रसाद (2006) 'शिक्षा मनोविज्ञान, अनु प्रकाशन, जयपुर।
8. गैरेट हेनरी ई. (1989), 'शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकीय के प्रयोग कल्याणी पब्लिशर्स, उ.प्र. ।
9. माथुर, डॉ. एस.एस. (1993). 'शिक्षा मनोविज्ञान, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा। पाठक,
10. Berman, P. & McLaughlin, M. (1978) Implementation of education innovation. Educational Forum, 40 (3) 345-370